Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

Original Article

भारत और नेपाल भू–राजनीतिक सम्बध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (पर्यटन और संस्कृति के सन्दर्भ में)

डॉ. अजय तिवारी
डी.लिट्, भूगोल विभाग, शास.मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी, महिला महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

Manuscript ID:
JRD -2026-180508
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 5(A)
Pp. 30-37
May- 2026
Submitted: 15 Apr. 2026
Revised: 25 Apr. 2026
Accepted: 10 May. 2026
Published: 31 May 2026

सारांश

यह शोध पत्र भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय सम्बधों के उन अनूठे आयामों का विश्लेषण करता है जो पारम्परिक सामरिक और सैन्य विमर्श से परे हैं। भारत और नेपाल के सम्बध केवल दो सम्प्रभु राष्ट्रों के बीच की कूटनीति नहीं हैं, बल्कि यह एक प्राचीन सभ्यतागत निरन्तरता है जिसे रोटी–बेटी का रिश्ता कहा जाता है। 1,850 किलोमीटर से अधिक लम्बी खुली सीमा के बावजूद, दोनों देशों के बीच सम्बधों का वास्तविक आधार साझा धार्मिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत है। प्रस्तुत शोध का मुख्य केन्द्र सांस्कृतिक कूटनीति और पर्यटन है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे पशुपतिनाथ–काशी विश्वनाथ परिपथ और रामायण परिपथ अयोध्या–जनकपुर दोनों देशों के बीच एक अदृश्य सुरक्षा चक्र का निर्माण करते हैं। शोध में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में जहाँ चीन अपनी बौद्ध कूटनीति के माध्यम से नेपाल में अपना रणनीतिक आधार बढ़ा रहा है, भारत के लिए अपनी नरम शक्ति को पुनः सक्रिय करना अनिवार्य हो गया है। शोध पद्धति के रूप में द्वितीयक आंकड़ों और गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि राजनीतिक अस्थिरता और सीमा विवादों जैसे– कालापानी विवाद के समय भी पर्यटन और सांस्कृतिक प्रवाह ने सम्बधों को पूरी तरह टूटने से बचाया है। अंततः यह शोध पत्र सुझाव देता है कि डिजिटल कनेक्टिविटी, सुगम बुनियादी ढांचा और साझा धार्मिक परिपथ का एकीकरण ही नेपाल को चीन के रणनीतिक ऋण जाल से दूर रखने और भारत की पड़ोसी प्रथम नीति को सफल बनाने का सबसे प्रभावी मार्ग है।

कुंजी शब्द – *सांस्कृतिक कूटनीति, सौम्य कूटनीति, सभ्यतागत जुड़ाव, सामरिक साधन, खुली सीमा, पड़ोसी प्रथम, बुद्धिस्ट परिपथ*

परिचय

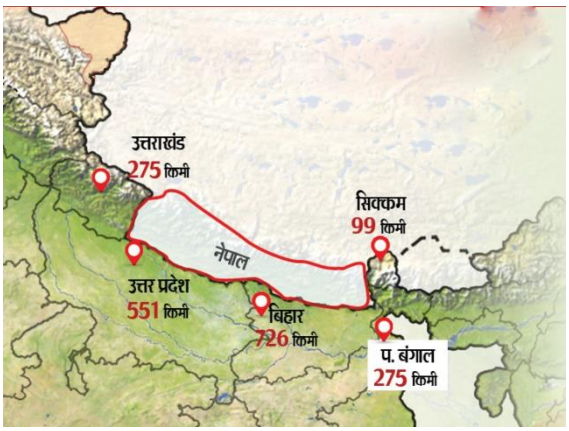

भारत और नेपाल के सम्बध विश्व राजनीति के मानचित्र पर अपनी तरह के अनूठे और विलक्षण सम्बध हैं। जहाँ विश्व के अधिकांश देशों की सीमाएं कंटीले तारों, सैनिकों और कड़े वीजा नियमों से बंधी होती है, वहीं भारत और नेपाल के बीच की 1,850 किलोमीटर से अधिक की खुली सीमा एक ऐसी सभ्यतागत खिड़की है, जिससे दोनों देशों की जनता बिना किसी अवरोध के एक–दूसरे के जीवन, संस्कृति और अर्थतंत्र में रची–बसी है। इस अध्ययन में हम भारत–नेपाल सम्बधों के उन आधारभूत स्तंभों का विश्लेषण किया गया है। जो पर्यटन और संस्कृति के माध्यम से भू–राजनीति सम्बधों को प्रभावित करते हैं। भारत और नेपाल के सम्बधों का इतिहास 1950 की सन्धि से नहीं, बल्कि सतयुग और त्रेतायुग की पौराणिक कथाओं से शुरू होता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, अयोध्या के राजकुमार राम और जनकपुर नेपाल की राजकुमारी सीता का विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं था, बल्कि वह आर्यवर्त और हिमालयी संस्कृति का महासंगम था। आज भी विवाह पंचमी के अवसर पर अयोध्या से जनकपुर जाने वाली बारात इस ऐतिहासिक सत्य की जीवंत गवाह है।इसी प्रकार, भगवान बुद्ध का जन्म लुम्बिनी नेपाल में हुआ, जबकि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति बोधगया भारत में हुई। यह बुद्ध का पथ दोनों देशों के बीच एक ऐसा आध्यात्मिक सेतु बनाता है जिसे दुनिया की कोई भी राजनीतिक सीमा अलग नहीं कर सकती। जोसेफ नाई द्वारा प्रतिपादित नरम शक्ति की अवधारणा भारत और नेपाल के सन्दर्भ में पूर्णतः सटीक बैठती है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. अजय तिवारी डी. लिट भूगोल विभाग, शास.मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी, महिला महाविद्यालय जबलपुर; (म. प्र)

How to cite this article:
तिवारी, अजय. (2026). भारत और नेपाल भू-राजनीतिक सम्बध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (पर्यटन और संस्कृति के सन्दर्भ में). Journal of research & development, 18(5(A)), 30–37.
https://doi.org/10.5281/zenodo.20919562

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20919562
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

कूटनीति केवल कागजों पर हस्ताक्षर करने का नाम नहीं है, जब एक नेपाली नागरिक बनारस के घाटों पर मोक्ष की कामना करता है या एक भारतीय नागरिक पशुपतिनाथ के दर्शन कर धन्य महसूस करता है, तो वह अनजाने में ही सौम्य कूटनीति का सबसे बड़ा दूत बन जाता है।सांस्कृतिक कूटनीति के केन्द्र में रोटी–बेटी का रिश्ता है। तराई क्षेत्र में रहने वाले लोगों के सामाजिक और पारिवारिक सम्बध अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानते। यह आपसी निर्भरता ही वह कारण है कि राजनीतिक स्तर पर तनाव होने के बावजूद, जमीनी स्तर पर जनता के बीच प्रेम और सहयोग बना रहता है। नेपाल एक भू–आबद्ध देश है, जिसकी अर्थव्यवस्था में पर्यटन का योगदान 7% से अधिक है। इस पर्यटन का सबसे बड़ा हिस्सा भारत से आता है।

1. **धार्मिक पर्यटन–** मुक्तिनाथ, पशुपतिनाथ और लुम्बिनी।
2. **साहसिक पर्यटन–** पोखरा और माउंट एवरेस्ट के आधार शिविर।

भारतीय पर्यटकों द्वारा किया जाने वाला खर्च नेपाल के स्थानीय बाजारों, होटलों और परिवहन उद्योग को संजीवनी प्रदान करता है। पर्यटन के माध्यम से होने वाला यह आर्थिक लेन–देन भू–राजनीति को स्थिरता प्रदान करता है क्योंकि एक समृद्ध और स्थिर नेपाल भारत की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है।

21वीं सदी में भारत–नेपाल सम्बधों के बीच चीन एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। चीन अपनी आर्थिक शक्ति और बेल्ट एंड रोड पहल के माध्यम से नेपाल के बुनियादी ढांचे में प्रवेश कर रहा है। यहाँ भू–राजनीति का खेल बदल रहा है। चीन अब लुम्बिनी में इंटरनेशनल बुद्धिस्ट एयरपोर्ट और विशाल मठों का निर्माण कर भारत की सांस्कृतिक बढ़त को चुनौती दे रहा है। ऐसे में भारत के लिए अपनी पड़ोसी प्रथम नीति के तहत पर्यटन और संस्कृति को नए सिरे से परिभाषित करना एक सामरिक आवश्यकता बन गया है।

यह शोध पत्र ऐसे समय में महत्वपूर्ण है जब दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय वर्चस्व की जंग छिड़ी है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि भारत को नेपाल के साथ अपने सम्बधों को केवल बड़ा भाई बनाम छोटा भाई के सुरक्षात्मक चश्मे से नहीं, बल्कि साझा विरासत के साझीदार के रूप में देखना चाहिए। पर्यटन का विकास और सांस्कृतिक संरक्षण ही वह रास्ता है जो नेपाल को किसी भी बाहरी प्रभाव के ऋण जाल से बचा सकता है।

साहसिक पर्यटन– पोखरा और माउंट एवरेस्ट के आधार शिविर।

भारतीय पर्यटकों द्वारा किया जाने वाला खर्च नेपाल के स्थानीय बाजारों, होटलों और परिवहन उद्योग को संजीवनी प्रदान करता है। पर्यटन के माध्यम से होने वाला यह आर्थिक लेन–देन भू–राजनीति को स्थिरता प्रदान करता है क्योंकि एक समृद्ध और स्थिर नेपाल भारत की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। 21वीं सदी में भारत–नेपाल सम्बधों के बीच चीन एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। चीन अपनी आर्थिक शक्ति और बेल्ट एंड रोड पहल के माध्यम से नेपाल के बुनियादी ढांचे में प्रवेश कर रहा है। यहाँ भू–राजनीति का खेल बदल रहा है। चीन अब लुम्बिनी में इंटरनेशनल बुद्धिस्ट एयरपोर्ट और विशाल मठों का निर्माण कर भारत की सांस्कृतिक बढ़त को चुनौती दे रहा है। ऐसे में भारत के लिए अपनी पड़ोसी प्रथम नीति के तहत पर्यटन और संस्कृति को नए सिरे से परिभाषित करना एक सामरिक आवश्यकता बन गया है। यह शोध पत्र ऐसे समय में महत्वपूर्ण है जब दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय वर्चस्व की जंग छिड़ी है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि भारत को नेपाल के साथ अपने सम्बधों को केवल बड़ा भाई बनाम छोटा भाई के सुरक्षात्मक चश्मे से नहीं, बल्कि साझा विरासत के साझीदार के रूप में देखना चाहिए। पर्यटन का विकास और सांस्कृतिक संरक्षण ही वह रास्ता है जो नेपाल को किसी भी बाहरी प्रभाव के ऋण जाल से बचा सकता है।

साहित्य समीक्षा

भारत और नेपाल के सम्बधों पर अकादमिक विमर्श दशकों से चलता आ रहा है। इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उन प्रमुख विचारधाराओं, पुस्तकों और शोधों का विश्लेषण करना है जिन्होंने पर्यटन, संस्कृति और भू–राजनीति के अन्तर–सम्बधों को परिभाषित किया है। परम्परागत रूप से, भारत–नेपाल सम्बधों को विद्वानों ने सुरक्षा के चश्मे से अधिक देखा है।

एस. डी. मुनि– अपनी पुस्तक 'India and Nepal: A Changing Relationship' में मुनि तर्क देते हैं कि भारत की नेपाल नीति हमेशा से स्थिरता और सुरक्षा के इर्द–गिर्द रही है। उनके अनुसार, 1950 की सन्धि इन सम्बधों का आधार है, लेकिन वे यह भी स्वीकार करते हैं कि राजनीतिक सन्धियाँ जनता के बीच के सांस्कृतिक सम्बधों की जगह नहीं ले सकतीं।

सी. राजा मोहन– वे अपने लेखों में पड़ोसी प्रथम नीति पर जोर देते हुए कहते हैं कि भारत को नेपाल के साथ अपने भौगोलिक लाभ का उपयोग करना चाहिए। उनका साहित्य यह संकेत देता है कि कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचा ही वह सेतु है जो सांस्कृतिक सम्बधों को आर्थिक लाभ में बदल सकता है। हाल के वर्षों में विद्वानों ने कठोर शक्ति के बजाय नरम शक्ति पर अधिक शोध किया है।

जोसेफ नाई– यद्यपि उनका कार्य वैश्विक है, लेकिन उनके नरम शक्ति के सिद्धांत को अखिलेश उपाध्याय जैसे नेपाली विश्लेषकों ने भारत–नेपाल सन्दर्भ में लागू किया है। वे मानते हैं कि पशुपतिनाथ और मुक्तिनाथ जैसे धार्मिक स्थल भारत की सबसे बड़ी कूटनीतिक सम्पत्ति हैं।

धार्मिक पर्यटन का साहित्य– विभिन्न शोध पत्रों में रामायण परिपथ और बुद्धिस्ट परिपथ को सभ्यतागत कूटनीति का हिस्सा माना गया है। विद्वानों का मत है कि ये परिपथ केवल तीर्थयात्रा के मार्ग नहीं हैं, बल्कि ये चीन के बढ़ते आर्थिक प्रभाव के खिलाफ एक सांस्कृतिक ढाल हैं। अकादमिक साहित्य में एक बड़ा हिस्सा अब नेपाल में चीन की सक्रियता पर केन्द्रित है।

ब्रह्म चेलानी– वे अपनी डेट–ट्रैप डिप्लोमेसी ऋण–जाल कूटनीति के सिद्धांतों के माध्यम से चेतावनी देते हैं कि नेपाल के पर्यटन बुनियादी ढांचे जैसे पोखरा एयरपोर्ट में चीन का निवेश केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामरिक है।

बौद्ध कूटनीति– पर शोध हालिया लेखों में यह चर्चा की गई है कि चीन कैसे खुद को **'बौद्ध धर्म के रक्षक'** के रूप में पेश कर रहा है। लुम्बिनी में चीनी निवेश का उद्देश्य भारत की उस पहचान को चुनौती देना है जो बुद्ध के साथ जुड़ी हुई है।

विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों की रिपोर्टों के अनुसार –

नेपाल का पर्यटन उद्योग काफी हद तक भारतीय बाजार पर टिका है। साहित्य यह भी दर्शाता है कि जब–जब सीमा पर तनाव जैसे–2015 की नाकेबंदी हुआ, तब–तब पर्यटन में भारी गिरावट आई जिसका सीधा असर नेपाल के मध्यम वर्ग पर पड़ा।

डिजिटल कनेक्टिविटी– हालिया लेखों में भारत के 'UPI' के नेपाल में विस्तार को एक गेम चेंजर के रूप में देखा जा रहा है। यह साहित्य बताता है कि कैसे तकनीकी एकीकरण सांस्कृतिक पर्यटन को और अधिक सुगम बना रहा है।

साहित्य में अन्तराल

उपलब्ध साहित्य का गहन अध्ययन करने पर यह पाया गया कि अधिकांश शोध या तो केवल शुद्ध राजनीति पर हैं या शुद्ध पर्यटन पर। पर्यटन, संस्कृति और भू–राजनीति के त्रिकोणीय सम्बध पर बहुत कम काम हुआ है। यह शोध पत्र इसी अन्तराल को भरने का प्रयास है, जहाँ हम देखेंगे कि कैसे एक पर्यटक की धार्मिक यात्रा अनजाने में ही एक बड़े भू–राजनीतिक लक्ष्य को सिद्ध करती है।

शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध की दिशा उसके उद्देश्यों से निर्धारित होती है। इस शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य भारत और नेपाल के बीच सभ्यतागत सम्बधों को आधुनिक भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से जोड़ना है। इसके विस्तृत उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

1. यह समझना कि सदियों पुरानी साझा धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत किस प्रकार समकालीन राजनीतिक उतार–चढ़ाव के बीच एक स्थिर कारक के रूप में कार्य करती है।
2. पर्यटन को केवल एक आर्थिक गतिविधि के रूप में न देखकर, इसे नरम शक्ति के एक सशक्त कूटनीतिक औजार के रूप में परखना।
3. नेपाल के लुम्बिनी जैसे क्षेत्रों में चीन के बढ़ते निवेश और उसकी बौद्ध पहचान बनाने की कोशिशों का भारत के हितों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध प्रश्न

इस शोध पत्र के केन्द्र में निम्नलिखित दो प्रश्न हैं, जिनका उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है–

1. क्या साझा सांस्कृतिक मूल्य जैसे– हिन्दू और बौद्ध परम्पराएं भारत और नेपाल के बीच उत्पन्न होने वाले क्षेत्रीय और सीमा विवादों जैसे– कालापानी या सुस्ता विवाद के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में बफर का काम करते हैं ?
2. चीन द्वारा नेपाल के पर्यटन बुनियादी ढांचे जैसे– अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों में किया जा रहा भारी निवेश, भारत की पारम्परिक सांस्कृतिक बढ़त को किस हद तक और किन तरीकों से चुनौती दे रहा है ?

शोध पद्धति

इस शोध को पूर्ण करने के लिए गुणात्मक शोध पद्धति का सहारा लिया गया है। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है।

आँकड़े संग्रह के स्रोत

चूँकि यह एक विस्तृत सभ्यतागत अध्ययन है, इसलिए इसमें द्वितीयक आंकड़ों का गहन उपयोग किया गया–

1. सरकारी अभिलेख भारत के विदेश मंत्रालय और नेपाल के पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।
2. अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियां 1950 की शान्ति और मित्रता सन्धि तथा हालिया द्विपक्षीय समझौतों का अध्ययन ।
3. अकादमिक साहित्य प्रतिष्ठित थिंक टैंक जैसे ORF (Observer Research Foundation) IDSA और नेपाल के विभिन्न विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित शोध पत्र।
4. सांख्यिकीय आँकड़े नेपाल पर्यटन बोर्ड द्वारा जारी पर्यटकों की वार्षिक संख्या और आर्थिक योगदान के आँकड़े।

विश्लेषण की तकनीक

1. तुलनात्मक विश्लेषण भारत और चीन की नेपाल में नरम शक्ति रणनीतियों की तुलना ।
2. ऐतिहासिक–सांस्कृतिक विश्लेषण पौराणिक सन्दर्भों को आधुनिक कूटनीतिक लाभ के साथ जोड़कर देखना।

शोध विवेचना

भारत–नेपाल भू–राजनीति सम्बधों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि दोनों देशों के सम्बध केवल काठमाण्डू और नई दिल्ली की राजधानियों के बीच नहीं, बल्कि पशुपतिनाथ और काशी, तथा जनकपुर और अयोध्या के बीच भी धड़कते हैं। पर्यटन और संस्कृति यहाँ मात्र मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि कूटनीति के सक्रिय कारक हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक कूटनीति साझा विरासत का सामरिक महत्व

भारत और नेपाल की भू–राजनीति सम्बधों को समझने के लिए केवल मानचित्र देखना पर्याप्त नहीं है, इसके लिए उन सांस्कृतिक पदचिह्नों को समझना आवश्यक है जो हजारों वर्षों से दोनों देशों की सीमाओं को धुंधला करते आए हैं। धार्मिक पर्यटन यहाँ मात्र एक उद्योग नहीं, बल्कि कूटनीति का एक जीवंत अंग है। इसे निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से गहराई से समझा जा सकता है।

रामायण परिपथ एक आध्यात्मिक और सामाजिक सेतु

रामायण परिपथ भारत की नरम शक्ति का सबसे सफल उदाहरण बनकर उभरा है। यह केवल एक पर्यटन मार्ग नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत गलियारा है।

जनकपुर अयोध्या सम्बध

नेपाल का जनकपुर माता सीता की जन्मभूमि है और अयोध्या भगवान राम की। इन दोनों स्थलों के बीच का जुड़ाव रोटी–बेटी के रिश्ते को परिभाषित करता है। जब अयोध्या से भारत गौरव ट्रेन जनकपुर पहुँचती है, तो वह केवल पर्यटक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संदेशवाहक लेकर जाती है।

सामरिक लाभ

यह परिपथ नेपाल के तराई क्षेत्र को सीधे भारत के हृदय स्थल उत्तर प्रदेश और बिहार से जोड़ता है। यह जुड़ाव सीमावर्ती क्षेत्रों में कट्टरपंथ और बाहरी शक्तियों के प्रभाव को रोकने में एक सांस्कृतिक सुरक्षा घेरे का काम करता है।

शैव और शाक्त परम्परा

पशुपतिनाथ से काशी विश्वनाथ तक नेपाल और भारत के बीच का आध्यात्मिक भूगोल भगवान शिव और शक्ति के मन्दिरों से बंधा हुआ है। पशुपतिनाथ काठमाण्डू और काशी वाराणसी ऐतिहासिक रूप से पशुपतिनाथ मन्दिर के मुख्य पुजारी दक्षिण भारत से आते रहे हैं, जो इस क्षेत्र की व्यापक सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है। वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण और गंगा आरती का आकर्षण नेपाली तीर्थयात्रियों के लिए भारत को एक अनिवार्य गंतव्य बनाता है।

शक्तिपीठों का संजाल

भारत और नेपाल में फैले 51 शक्तिपीठ जैसे– नेपाल में गुहोश्वरी और भारत में कामाख्या या रजरप्पा एक साझा तंत्र लोक आस्था का निर्माण करते हैं। यह साझा आस्था राजनीतिक अस्थिरता के समय भी विश्वास की कमी को कम करने में सहायक होती है।

मुक्तिनाथ और हिमालयी कूटनीति

नेपाल के मुस्तांग जिले में स्थित मुक्तिनाथ मन्दिर हिन्दू और बौद्ध दोनों के लिए पवित्र है।

राजनीतिक यात्राओं का प्रभाव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुक्तिनाथ यात्रा ने इस स्थल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दी। ऐसी यात्राएं यह संदेश देती हैं कि भारत नेपाल के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों की धार्मिक पहचान का सम्मान करता है।

सामरिक स्थिति

मुक्तिनाथ चीन की सीमा के अत्यंत निकट है। यहाँ भारतीय तीर्थ यात्रियों की निरन्तर आवाजाही इस क्षेत्र में भारत की सांस्कृतिक उपस्थिति को मजबूत बनाए रखती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

सांस्कृतिक उत्सव और लोक–कला का एकीकरण
विवाह पंचमी और दशहरा

नेपाल का सबसे बड़ा त्योहार दशहरा और भारत का दशहरा एक ही उत्सव के दो नाम हैं। इसी प्रकार, जनकपुर में विवाह पंचमी के दौरान भारत से जाने वाली राम बारात सीमा के दोनों ओर के लोगों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करती है।

मिथिला चित्रकारी और भाषा

नेपाल के धनुषा जिले और भारत के मधुबनी बिहार की साझा मिथिला चित्रकारी और मैथिली भाषा यह सिद्ध करती है कि कला और भाषा किसी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की मोहताज नहीं होतीं।

5. डिजिटल और वित्तीय कनेक्टिविटी का समावेश

UPI का प्रभाव

वर्तमान भू–राजनीति सम्बधों में डिजिटल कूटनीति का समावेश हुआ है। नेपाल में भारतीय UPI (Unified Payments Interface) के शुरू होने से भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए पशुपतिनाथ या मुक्तिनाथ में दान और भुगतान करना सुलभ हो गया है। यह तकनीक सांस्कृतिक पर्यटन को आर्थिक एकीकरण में बदल रही है।

तालिका – 1
वित्तीय समावेश आव्यूह

आर्थिक पैरामीटर	आंकड़ा (2025 अनुमानित)	महत्व
व्यापार घाटा	~$6 बिलियन USD	नेपाल के लिए चिन्ता का विषय, जिसे बिजली निर्यात से कम किया जा रहा है।
प्रेषण	नेपाल की GDP का ~ 23%	भारत में काम करने वाले लाखों नेपाली नागरिक हर साल अरबों रुपये नेपाल भेजते हैं।
भारतीय निवेश	150+ बड़ी कम्पनियां	डाबर, आईटीसी, एशियन पेंट्स जैसे ब्रांड्स की नेपाल में बड़ी हिस्सेदारी है।
मुद्रा पेगिंग	1 INR= 1.6 NPR	नेपाली रुपया भारतीय रुपये के साथ स्थिर है, जिससे व्यापार में आसानी होती है।

स्रोत– नेपाल पर्यटन बोर्ड वर्ष 2025

बौद्ध कूटनीति और चीन की चुनौती

लुम्बिनी का सामरिक पहलू भारत और नेपाल की भू–राजनीति सम्बधों में भगवान बुद्ध केवल एक आध्यात्मिक शक्ति नहीं, बल्कि एक सामरिक शक्ति भी
हैं। जहाँ भारत बुद्ध को अपनी नरम शक्ति का आधार मानता है, वहीं चीन अब नेपाल के माध्यम से अपनी बौद्ध कूटनीति का विस्तार कर रहा है।

1. लुम्बिनी बनाम बोधगया राजनीतिक प्रतिस्पर्धा

भगवान बुद्ध का जन्म लुम्बिनी नेपाल में हुआ, जबकि ज्ञान बोधगया भारत में मिला, प्रथम उपदेश सारनाथ भारत में दिया और महापरिनिर्वाण कुशीनगर भारत में
हुआ। भारत इन सभी स्थलों को बुद्धिस्ट परिपथ के माध्यम से जोड़ रहा है ताकि वैश्विक बौद्ध समुदाय के लिए भारत–नेपाल एक साझा तीर्थ स्थल बने। चीन ने लुम्बिनी में भारी निवेश करके इसे एक विश्व शान्ति केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना बनाई

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

है। चीन का उद्देश्य बुद्ध के जन्म स्थान पर नियंत्रण करके दुनिया भर के बौद्ध देशों जैसे श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार को यह संदेश देना है कि बौद्ध धर्म का असली संरक्षक भारत नहीं, बल्कि चीन है।

2. बुनियादी ढांचा और भू–राजनीतिक चिंताएं

हवाई अड्डों की राजनीति

चीन की सहायता से नेपाल ने गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा लुम्बिनी और पोखरा अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाया है। ये दोनों हवाई अड्डे भारतीय सीमा के अत्यंत निकट हैं।

भारत की चिंता

भारत के लिए यह केवल पर्यटन का विषय नहीं है, बल्कि सुरक्षा का भी है। चीन द्वारा इन हवाई अड्डों का निर्माण उसकी सीमा विस्तार नीति का हिस्सा माना जाता है। भारत ने सुरक्षा कारणों से इन हवाई अड्डों के लिए अपने हवाई क्षेत्र के उपयोग पर सावधानी बरती है।

3. चीन का सांस्कृतिक निवेश

चीन केवल सड़कें नहीं बना रहा, बल्कि नेपाल में चीनी भाषा केन्द्रों और बौद्ध मठों के निर्माण के माध्यम से नेपाली युवाओं और भिक्षुओं के बीच अपनी पैठ बना रहा है। इसका उद्देश्य नेपाल की उस पारम्परिक भारत–उन्मुख सोच को बदलना है जो सदियों से चली आ रही है।

4. नरम शक्ति की जंग

चीन के पास पैसा और तकनीक हो सकती है, लेकिन भारत के पास सभ्यतागत गहराई है। भारत ने इस भू–राजनीतिक चुनौती का जवाब निम्नलिखित तरीके से दिया है–

लुम्बिनी में भारतीय केन्द्र

प्रधानमंत्री मोदी ने लुम्बिनी में ''**इंडिया इंटरनेशनल सेंटर फॉर बुद्धिस्ट कल्चर एंड हेरिटेज**'' का शिलान्यास किया। यह केन्द्र सीधे तौर पर चीन के प्रभाव को संतुलित करने के लिए बनाया जा रहा है।

कुशीनगर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

भारत ने कुशीनगर में अपना अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा शुरू कियाहै ताकि बौद्ध देशों से आने वाले पर्यटक सीधे भारत आ सकें और फिर सड़क मार्ग से नेपाल जाएं। नेपाल और भारत की खुली सीमा पर्यटन के लिए एक वरदान है, लेकिन चीन के बढ़ते दखल के कारण यह एक सुरक्षा चुनौती भी बनती जा रही है। चीन चाहता है कि नेपाल के पर्यटन द्वार उसके लिए और अधिक खुलें, जिससे वह भारत की '**सिलीगुड़ी कॉरिडोर**' जैसी संवेदनशील सीमाओं के करीब पहुँच सके। पर्यटन के बहाने चीनी जासूसी और तकनीकी निगरानी का खतरा भारत के लिए एक स्थायी भू–राजनीतिक सिरदर्द है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बुद्ध के नाम पर होने वाला पर्यटन अब भारत और चीन के बीच के क्षेत्रीय प्रभाव की जंग का मैदान बन गया है। भारत को अपनी स्थिति मजबूत रखने के लिए केवल आस्था पर निर्भर नहीं रहना होगा, बल्कि कनेक्टिविटी और तकनीक में भी चीन से आगे निकलना होगा।

परिणाम और विश्लेषण

इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारत और नेपाल के बीच पर्यटन और संस्कृति के माध्यम से उभरने वाले भू–राजनीतिक समीकरणों को समझना था। प्राप्त आंकड़ों, ऐतिहासिक सन्दर्भों और समकालीन घटनाओं के विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित परिणाम सामने आए हैं –

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

नरम शक्ति बनाम कठोर शक्ति का द्वंद्व

विश्लेषण का सबसे प्रमुख परिणाम यह है कि नेपाल में भारत की नरम शक्ति और चीन की कठोर शक्ति के बीच एक निरन्तर प्रतिस्पर्धा चल रही है।

सांस्कृतिक श्रेष्ठता

जहाँ चीन सड़कों, पुलों और हवाई अड्डों के निर्माण कठोर शक्ति के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, वहीं भारत की शक्ति नेपाल की सामाजिक और धार्मिक संरचना नरम शक्ति में निहित है।

जनता का रुझान

विश्लेषण दर्शाता है कि राजनीतिक स्तर पर भारत–विरोध की लहरों के बावजूद, नेपाल की आम जनता का झुकाव भारत की ओर बना रहता है। इसका मुख्य कारण साझा भाषा मैथिली, भोजपुरी, नेपाली, साझा धर्म और साझा पारिवारिक मूल्य हैं। चीन के पास इस **'सभ्यतागत जुड़ाव'** का कोई विकल्प मौजूद नहीं है।

पर्यटन का रणनीतिक हथियार के रूप में उपयोग

पर्यटन अब केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं रह गया है, बल्कि यह एक **'सामरिक साधन'** बन चुका है।

आर्थिक निर्भरता का विश्लेषण

नेपाल के पर्यटन बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय पर्यटक नेपाल की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। चीन से आने वाले पर्यटक मुख्य रूप से सरकारी परियोजनाओं या संगठित समूहों का हिस्सा होते हैं, जबकि भारतीय पर्यटक नेपाल के सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों जैसे– **मुक्तिनाथ या पाथीभरा** तक पहुँचते हैं।

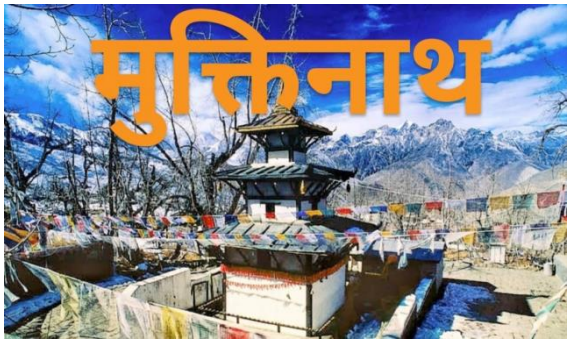

भू–राजनीतिक परिणाम

नेपाल की अर्थव्यवस्था में भारत का यह निरन्तर योगदान काठमाण्डू की सरकारों पर एक अदृश्य दबाव बनाए रखता है। नेपाल यह भली–भांति जानता है कि भारत से सम्बधों में कड़वाहट का सीधा असर उसके लाखों नागरिकों की आजीविका होटल, गाइड, परिवहन पर पड़ेगा।

चीन की चेकबुक कूटनीति और पर्यटन बुनियादी ढांचा

शोध के दौरान चीन द्वारा निर्मित पोखरा और लुम्बिनी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का विशेष विश्लेषण किया गया है।

विफलता का सामरिक पहलू

ये हवाई अड्डे फिलहाल अपनी क्षमता के अनुसार संचालित नहीं हो पा रहे हैं। विश्लेषण यह संकेत देता है कि चीन का निवेश आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि रणनीतिक घेराबंदी के लिए था।

भारत की सुरक्षा चिन्ता

ये बुनियादी ढांचे भारतीय सीमा के इतने करीब हैं कि इन्हें भविष्य में सैन्य उद्देश्यों के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। यह परिणाम निकलता है कि पर्यटन के नाम पर किया गया चीनी निवेश भारत के **''सिलीगुड़ी कॉरिडोर''** के लिए एक सम्भावित खतरा उत्पन्न करता है।

डिजिटल कनेक्टिविटी

यह एक नया भू–राजनीतिक आयाम है जो हाल के वर्षों में UPI का नेपाल में विस्तार एक क्रान्तिकारी परिणाम के रूप में उभरा है।

पारदर्शिता और सुगमता

डिजिटल भुगतान ने भारतीय पर्यटकों के लिए नेपाल की यात्रा को अत्यंत सरल बना दिया है। यह न केवल व्यापार को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि नेपाल की अर्थव्यवस्था को भारत के डिजिटल ईकोसिस्टम के साथ जोड़ रहा है।

चीन पर बढ़त

चीन के अलीपे के मुकाबले भारतीय UPI का नेपाल में स्वीकार्य होना यह दर्शाता है कि भारत तकनीकी और आर्थिक रूप से नेपाल के अधिक करीब है।

खुली सीमा अवसर और चुनौतियाँ

खुली सीमा का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि यह पर्यटन को निर्बाध बनाती है, जिससे लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान और विश्वास बढ़ता है। चीन इस खुली सीमा का लाभ उठाकर अपने एजेंटों या अवैध गतिविधियों के माध्यम से भारत की आन्तरिक सुरक्षा में सेंध लगाने का प्रयास करता है। परिणाम यह निकलता है कि भारत को पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ–साथ **'स्मार्ट बॉर्डर मैनेजमेंट'** पर निवेश करने की आवश्यकता है।

धार्मिक परिपथ

विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि रामायण और बुद्धिस्ट परिपथ केवल धार्मिक मार्ग नहीं हैं, बल्कि ये भारत की **'एक्ट ईस्ट'** और पड़ोसी प्रथम नीतियों के सफल क्रियान्वयन के उदाहरण हैं।

परिणाम

इन परिपथों ने दक्षिण–पूर्व एशिया थाईलैंड, वियतनाम, श्रीलंका के देशों को भी नेपाल और भारत के साथ एक साझा मंच पर ला खड़ा किया है। इससे भारत को दक्षिण एशिया में एक सांस्कृतिक नेतृत्व प्राप्त होता है, जो चीन के प्रभाव को सन्तुलित करने के लिए पर्याप्त है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के माध्यम से भारत और नेपाल के बीच के जटिल भू–राजनीतिक सम्बधों को पर्यटन और संस्कृति के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। सम्पूर्ण अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारत–नेपाल सम्बध केवल दो देशों के बीच के कूटनीतिक अभिलेख नहीं हैं, बल्कि यह एक साझा सभ्यता की जीवंत अभिव्यक्ति है। जहाँ विश्व की अन्य सीमाओं पर तनाव और अलगाव की दीवारें होती हैं,
वहीं भारत–नेपाल की खुली सीमा सांस्कृतिक एकता
और आर्थिक अन्तरनिर्भरता का प्रतीक है। शोध का
सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सांस्कृतिक कूटनीति भारत के पास एक ऐसा **'ब्रह्मास्त्र'** है जिसका कोई विकल्प चीन या किसी अन्य वैश्विक शक्ति के पास नहीं है। पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ, जानकी मन्दिर और लुम्बिनी केवल धार्मिक स्थल
नहीं हैं, बल्कि वे करोड़ों लोगों के दिलों को जोड़ने
वाले केन्द्र हैं। विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि जब राजनीतिक सम्बधों में **'ठहराव'** आता है, तब यही
सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन सम्बधों को पुर्नजीवित करने के लिए सुरक्षा वाल्व का काम करता है। भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से, नेपाल में चीन का बढ़ता दखल भारत के लिए एक खतरे की घंटी की तरह है। चीन की चेकबुक कूटनीति ने नेपाल के बुनियादी ढांचे को तो प्रभावित किया है, लेकिन वह नेपाली जनता की आत्मा और उनकी पहचान जो कि हिन्दू और बौद्ध धर्म से जुड़ी है में प्रवेश करने में असफल रहा है। भारत के लिए परिणाम यह निकलता है कि उसे चीन के आर्थिक निवेश का जवाब केवल आर्थिक निवेश से नहीं, बल्कि इमोशनल और डिजिटल कनेक्टिविटी से देना होगा।

निष्कर्ष यह भी रेखांकित करता है कि नेपाल की आर्थिक स्थिरता भारत के हित में है। यदि नेपाल पर्यटन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनता है, तो वह बाहरी शक्तियों के **'ऋण जाल'** में नहीं फंसेगा। भारत द्वारा समर्थित रामायण और बुद्धिस्ट परिपथ न केवल पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि वे नेपाल के स्थानीय समुदायों को रोजगार प्रदान कर एक मजबूत मध्यवर्ग का निर्माण कर रहे हैं, जो भारत के साथ शान्तिपूर्ण सम्बधों का पक्षधर है।

सन्दर्भ सूची

1. केशरी, बी. पी. (2018): झारखण्ड का इतिहास और संस्कृति, राँची, भारत, झारखण्ड झरोखा प्रकाशन ।
2. मुनि, एस. डी. (2016): भारत की विदेश नीति– लोकतंत्र का आयाम (हिन्दी अनुवाद) नई दिल्ली. भारत, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. तिवारी, आर. के. (2019): छोटानागपुर और नेपाल– ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सम्बध. पटना, भारत,
4. भट्टराई, पी. (2018). भारत की नेपाल नीति में सांस्कृतिक कूटनीति की भूमिका, दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका, 6(2), 145–158.
5. नायक, एस.सी. (2010): भारत–नेपाल सम्बधः संक्रमण के दिन– इंडियन जर्नल ऑफ एशियन अफेयर्स, 23(1/2), पृ–71–88
6. Nayak, S.C.(2010): India-Nepal relations: The days of transition- Indian Journal of Asian Affairs, 23(1/2), P - 71-88
7. Shrestha, B (2022): Economic impact of Indian religious tourism on Nepal's GDPHimalayan Economic Review, 14(3), P-45-62
8. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार (2024)
9. वार्षिक रिपोर्ट 2023–24 पड़ोसी प्रथम नीति, भारत सरकार

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

10. नेपाल पर्यटन बोर्ड (2025)
11. नेपाल पर्यटन सांख्यिकी 2023 वार्षिक सांख्यिकीय रिपोर्ट काठमाण्डू नेपाल सरकार।
12. विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद् (2023)
13. आर्थिक प्रभाव अनुसंधान – नेपाल 2023
14. https://wttc.org
15. https://www.orfonline.org
16. https://indiane.press.com
17. https://www.mea.gov.in